

# NEXT IAS

## दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

---

शहरी शासन चुनौतियों से निपटने के लिए  
नगरपालिका राजकोषीय सुधार महत्त्वपूर्ण

---

[www.nextias.com](http://www.nextias.com)

## शहरी शासन चुनौतियों से निपटने के लिए नगरपालिका राजकोषीय सुधार महत्वपूर्ण

### सन्दर्भ

- हाल ही में, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने नगर निगमों के वित्त पर एक व्यापक रिपोर्ट जारी की, जो तीव्रता से हो रहे शहरीकरण के कारण शहरी क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाली सार्वजनिक सेवाओं की बढ़ती माँग पर बल देती है।
  - इसके बावजूद, भारत में नगर निगम (MC) सीमित राजस्व उत्पन्न करते हैं और वित्तपोषण के लिए सरकार के ऊपरी स्तरों पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं, जिससे उनका परिचालन लोचशीलता सीमित हो जाता है।

### नगर निगम (MCs) और अन्य शहरी स्थानीय निकाय (ULBs)

- 74वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 ने संविधान में भाग IX-A प्रस्तुत किया, जिसने MCs और अन्य ULBs की स्थापना और कामकाज के लिए एक संवैधानिक आधार प्रदान किया।
- उद्देश्य**
  - शक्तियों का विकेंद्रीकरण;
  - वित्तीय स्वायत्तता बढ़ाना;
  - नियमित चुनाव सुनिश्चित करना;
  - समावेशी शासन को बढ़ावा देना;

### भारत में मजबूत नगर निगमों (MCs) के लाभ

- स्वच्छ पेयजल, स्वच्छता, अपशिष्ट प्रबंधन और सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी उन्नत सार्वजनिक सेवाएँ।
  - इससे शहरी निवासियों के जीवन स्तर में सुधार और जीवन की बेहतर गुणवत्ता प्राप्त होती है।
- सड़कों, पुलों, सार्वजनिक परिवहन और पार्कों सहित कुशल बुनियादी ढाँचा विकास।
  - कुशल बुनियादी ढाँचा विकास कनेक्टिविटी को बढ़ाता है, यातायात की भीड़ को कम करता है और सतत शहरी विकास को बढ़ावा देता है।
- आर्थिक विकास और रोजगार सृजन:** व्यवसायों और उद्योगों के लिए अनुकूल वातावरण बनाकर, मजबूत MCs आर्थिक विकास एवं रोजगार सृजन में योगदान देते हैं।
  - अच्छी तरह से बनाए रखा बुनियादी ढाँचा एवं कुशल सार्वजनिक सेवाएँ निवेश को आकर्षित करती हैं और उद्यमशीलता को बढ़ावा देती हैं, जिससे रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है।
- अपशिष्ट प्रबंधन, प्रदूषण नियंत्रण और हरित स्थानों जैसी पहलों के माध्यम से पर्यावरणीय स्थिरता।
  - ये प्रयास शहरीकरण के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने और शहरी पर्यावरण की समग्र गुणवत्ता में सुधार करने में सहायता करते हैं।
- निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में नागरिक भागीदारी के लिए एक मंच प्रदान करके लोकतांत्रिक शासन।
  - नियमित चुनाव एवं पारदर्शी प्रशासनिक प्रथाएँ निवासियों को अपने शहरों के विकास और प्रबंधन में अपनी बात रखने का अधिकार देती हैं।
- सामाजिक समानता यह सुनिश्चित करके कि समाज के सभी वर्गों को आवश्यक सेवाओं और अवसरों तक पहुँच प्राप्त हो।

- हाशिए के समुदायों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा एवं आवास में सुधार के उद्देश्य से कार्यक्रम सामाजिक असमानताओं को कम करने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने में सहायता करते हैं।

### नगर निगम के समक्ष वर्तमान वित्तीय चुनौतियाँ

- **अपर्याप्त राजस्व सृजन:** हाल की रिपोर्टों के अनुसार, 2023-24 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में नगर निगमों का राजस्व मात्र 0.6% होगा, जबकि शहरी क्षेत्र देश के आर्थिक उत्पादन में लगभग 60% योगदान देते हैं।
  - कमजोर संपत्ति कर राजस्व, जो सकल घरेलू उत्पाद का केवल 0.12% है, इस समस्या को बढ़ा देता है।
  - उदाहरण के लिए, राज्य हस्तांतरण नगर निगमों के राजस्व का 30% है, जबकि संघ हस्तांतरण केवल 2.5% योगदान देता है।
- **सरकारी अनुदान पर निर्भरता:** 50% से अधिक नगर निगम अपने राजस्व का आधे से भी कम स्वतंत्र रूप से उत्पन्न करते हैं, जबकि 2022-23 में सरकारी हस्तांतरण में 20% से अधिक की वृद्धि हुई।
  - कुछ बड़े नगर निगमों के बीच राजस्व सृजन का संकेन्द्रण इस समस्या को बढ़ा देता है, जिसमें शीर्ष दस नगर निगमों के पास कुल नगर निगम राजस्व का 58% से अधिक हिस्सा है।
- **कर और शुल्क संग्रह में अक्षमता:** संपत्ति कर प्रणालियों में अक्षमता एवं जल आपूर्ति और स्वच्छता जैसी आवश्यक सेवाओं के लिए अपर्याप्त रूप से समायोजित उपयोगकर्ता शुल्क लागत वसूली को प्रभावित करते हैं।
  - इससे बुनियादी ढाँचे एवं सेवाओं को बनाए रखने और सुधारने के लिए धन की कमी होती है।
- **राजस्व संकेन्द्रण:** नगर निगमों का 58% से अधिक राजस्व शीर्ष 10 नगर निगमों द्वारा उत्पन्न किया जाता है, जिससे छोटे और कम समृद्ध ULBs अपने वित्तीय दायित्वों को पूरा करने के लिए संघर्ष करते हैं।
- **राजकोषीय विकेंद्रीकरण:** ULBs को वित्तीय शक्तियों का हस्तांतरण अपर्याप्त रहा है।
  - राज्य और केंद्र सरकारों से हस्तांतरित धन की मात्रा एवं पूर्वानुमान प्रायः अपर्याप्त होते हैं, जिससे ULBs के लिए वित्तीय अस्थिरता होती है।
- **पारदर्शिता और जवाबदेही:** मजबूत प्रदर्शन माप एवं लेखा परीक्षा तंत्र की अनुपस्थिति नगर निगमों के वित्तीय स्वास्थ्य और सेवा वितरण का आकलन करना मुश्किल बनाती है।

### वित्तीय सुधार के लिए रणनीतिक सिफारिशें

- **राजस्व सृजन के अपने स्रोत:** नगर निगमों के लिए कर राजस्व का प्रमुख घटक संपत्ति कर है, लेकिन संग्रह दक्षता कम है।
  - रिपोर्ट में अनुपालन में सुधार एवं राजस्व रिसाव को रोकने के लिए कर संग्रह के लिए GIS-आधारित संपत्ति कर मानचित्रण और डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसी तकनीकों को अपनाने का सुझाव दिया गया है।
  - गैर-कर राजस्व ने भी नगर निगम के राजस्व की वसूली में योगदान दिया है, लेकिन अभी भी बेहतर प्रवर्तन और संस्थागत क्षमता के संवर्द्धन की आवश्यकता है।

- **उधार और नगरपालिका बांड वित्तपोषण:** नगरपालिका बांड वित्तपोषण में कुछ सुधार देखा गया है, जिसमें नगरपालिकाओं ने पर्यावरण के लिए लाभकारी परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए ग्रीन नगरपालिका बांड में निवेश किया है।
  - हालांकि, सरकार के उच्च स्तरों से हस्तांतरण और अनुदान पर निर्भरता जारी है, जिससे नगरपालिकाओं की कार्यात्मक एवं वित्तीय स्वायत्तता प्रभावित हो रही है।
- **राजकोषीय विकेंद्रीकरण को बढ़ावा देना:** राज्य वित्त आयोगों (SFCs) को सुदृढ़ करना और व्यय दायित्वों एवं वित्तपोषण मिश्रण का अनुमान लगाने के लिए रूपरेखा स्थापित करना राजकोषीय विकेंद्रीकरण को बढ़ा सकता है।
  - राज्य और केंद्रीय हस्तांतरण के लिए स्पष्ट नियम-आधारित रूपरेखा ULBs के लिए पूर्वानुमानित मुआवज़ा सुनिश्चित कर सकती है।
- **पारदर्शिता और जवाबदेही में सुधार:** सार्वजनिक प्रकटीकरण कानूनों को लागू करना और बजट एवं वित्तीय निर्णय लेने में नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देना पारदर्शिता तथा जवाबदेही को बढ़ा सकता है।
  - सहभागी बजट एवं सामुदायिक भागीदारी विश्वास बनाने में सहायता कर सकती है और यह सुनिश्चित कर सकती है कि धन का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाए।
- **स्मार्ट सिटी मिशन एवं अटल कायाकल्प एवं शहरी परिवर्तन मिशन (AMRUT) जैसी विकास पहलों का समर्थन करना,** जिनका उद्देश्य बुनियादी ढाँचे में सुधार, सेवा वितरण को बढ़ाना और सतत शहरी विकास को बढ़ावा देना है।
- **स्थानान्तरण पर निर्भरता कम करना:** पूर्वानुमानित मुआवज़ा सुनिश्चित करने के लिए राज्य और केंद्रीय स्थानान्तरण के लिए नियम-आधारित रूपरेखा को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना।

### निष्कर्ष और आगे की राह

- शहरी शासन में वित्तीय स्थिरता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए नगरपालिका राजकोषीय सुधार आवश्यक हैं।
- राजस्व सृजन में चुनौतियों का समाधान करके और भागीदारीपूर्ण शासन को बढ़ाकर, भारत एक अधिक लचीली एवं कुशल नगरपालिका प्रणाली का निर्माण कर सकता है।
- इन सुधारों की सफलता से न केवल सेवा वितरण में सुधार होगा, बल्कि शहरी क्षेत्रों के समग्र विकास में भी योगदान मिलेगा।

Source: BS



### दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न.** शहरी शासन चुनौतियों से निपटने में नगरपालिका राजकोषीय सुधारों के महत्व पर चर्चा कीजिए। आवश्यक प्रमुख सुधारों और शहरी विकास एवं नागरिक कल्याण पर उनके संभावित प्रभाव का विश्लेषण कीजिए।